

# जनगणना में अवैतनिक

## कामकाजी महिलाओं का समावेश

डॉ. नरेश पुरोहित

**भा**रत की जनगणना में सबसे मुश्किल मसला काम की अवधारणा का सूत्रीकरण और उसको लागू करना रहा है। यूं तो उद्यम को 'आर्थिक रूप से फायदेमन्द गतिविधि' के रूप में परिभाषित किया गया है। परन्तु भारत में अवैतनिक उपक्रमों को भी पारिवारिक कार्यों की सूची में शामिल किया गया है। बच्चों को पढ़ाना, अपने परिवारजनों के कपड़े इस्त्री करना, पानी भरना/लाना, ईंधन, चारा व कोयला इकट्ठा करना, पशुपालन और जीवनयापन से जुड़ी बहुत-सी गतिविधियां जनगणना में उद्योग की परिभाषा में शामिल नहीं हैं। इसका प्रभाव विशेषकर लड़कियों और महिलाओं पर पड़ता है क्योंकि श्रम के परम्परागत विभाजन में ऐसे कामकाज अधिकांशतः इन्हीं के जिम्मे आते हैं। इससे महिलाएं और लड़कियां आंकड़ों से ओझल तो हो ही जाती हैं, साथ ही उनको 'गैर श्रमिकों' का भी दर्जा दे दिया जाता है। जबकि वास्तव में इन्हें बिना किसी आराम या छुट्टी के लम्बे समय तक काम करना पड़ता है। 1991 की जनगणना में पंजाब की लगभग 90% लड़कियां व औरतें 'गैरश्रमिकों' की श्रेणी में दर्ज हैं। बाकी राज्यों के आंकड़े भी कुछ अलग नहीं हैं।

दरअसल 'गैरश्रमिकों' में गृहणियों

की श्रेणी काफी अस्पष्ट है और देश के अलग-अलग भागों में अलग-अलग मतलब रखती है। विडम्बना तो यह है कि घर का काम ही काफी सारी महिलाओं को औपचारिक श्रम-बाजार से दूर रखता है। बीजिंग में प्रस्तुत भारत सरकार की रिपोर्ट स्वीकार करती है कि हिमालयाई क्षेत्र में एक अनुमान के अनुसार एक महिला एक साल में एक एकड़ फार्म में 3,485 घण्टे काम करती है। जबकि एक पुरुष 1,212 घण्टे और एक बैलों का जोड़ा 1,064 घण्टे ही काम करते हैं।

परिभाषा की इन सीमाओं के अलावा गणनाकारों और सर्वेक्षणकर्ताओं का काम को लेकर बना पूर्वाग्रह इस तस्वीर को और भी जटिल बना देता है। उस पर समाज में औरतों की परिस्थिति कुछ इस तरह की है कि वे अपनी ही क्षमताओं को कम आंकती हैं। इस सब के मद्देनजर उत्तर भारत के राज्यों में लड़कियों और महिलाओं द्वारा किए गए कामों का अल्पानुमान लगाया जाना या उन्हें दर्ज ही न करना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है।

काम सम्बंधी विभिन्न आंकड़ों में हो रहे इन खिलवाड़ों से न केवल विचारक वरन महिलाओं के मुद्दों से जुड़ी हुई विभिन्न संस्थाएं और जनगणना अधिकारी भी चिन्तित हैं।

इन मायनों में 2001 की जनगणना भी कोई अपवाद नहीं रहा। इस बार जनगणना शुरू होने से पहले ही अनेक विभागों, नारी शिक्षा केन्द्रों और शोधकर्ताओं ने जनगणना प्रश्नावलियों को तैयार करने और सर्वेक्षण हेतु उसे अंतिम रूप देने की प्रक्रिया की बारीकी से निगरानी की है। 1981 की जनगणना में पहली बार महिलाओं के उद्यम को जांचने पर जोर दिया गया था ताकि उनकी आर्थिक गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सके, भले ही वह सीमित हो।

1981 जनगणना की निर्देश-पुस्तिका में उद्योग पर मुख्य प्रश्न के साथ एक अतिरिक्त वाक्यांश था - 'काम' में फार्म और परिवार पर बिना वेतन के किया जाने वाला काम भी शामिल है। 1991 की जनगणना में इस वाक्यांश को मुख्य प्रश्नावली का हिस्सा बना दिया गया, ताकि ऐन काम के संदर्भ में जानकारी लेते वक्त सर्वेक्षणकर्ता अवैतनिक कामों की जानकारी हासिल कर सकें। इस बार यूनिकेफ ने पोस्टरों, कविता-छंदों और टेलीविज़न पर महिलाओं और लड़कियों द्वारा किए जा रहे ऐसे कामों को दर्शाता हुआ एक अभियान भी चलाया जिन्हें काम के दायरे में रखा जाना चाहिए। परन्तु काम की मौजूदा परिभाषा 'आर्थिक रूप से

